मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

चार साल में यमुना पुल 3
परीक्षा और आत्महत्या 4
सेंधमार बैंकर 5
राजमार्ग पर नर बलि 8

वर्ष 31 अंक -24 फ़रीदाबाद 10-16 जून 2018 फोन : - 9999595632 ₹ 2

फ़रीदाबाद में लड़कियों का वीडियो बनाने वाले गिरोह की खुली गुंडागर्दी, पुलिस हवाबाजी में व्यस्त

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद: शहर में गुंडों का एक गिरोह सक्रिय है जो शहर की दुकानों, मॉल्स, रेस्टोरेंट में घूम घूमकर लड़कियों के वीडियो छिपे हुए कैमरे से बनाता है और उन्हें बदनाम करने के लिए सोशल मीडिया साइट्स पर डालता है। पांच दिन पहले सेक्टर 21 सी मार्केट में ऐसी ही घटना हुई। अपनी सहेलियों के साथ वहां के एक रेस्त्रा में पार्टी कर रही मानव रचना यूनिवर्सिटी की छात्रा की वीडियो इस गुंडा गिरोह ने बनाई। जब लड़की के माता-पिता ने पुलिस में रिपोर्ट लिखाई तो गुंडों ने उनके घर में पहुंचकर फायरिंग की, घर और गाड़ियों के शीशे तोड़ दिए। आरोप है कि इन गुंडा तत्वों को कुछ भाजपा नेताओं का भी संरक्षण मिला हुआ है। दो-दो एफआईआर के बावजूद पांच दिन के बाद भी अपराधी पकड़े नहीं जा सके हैं।

लड़की को वीडियो बनाने और सोशल मीडिया साइट्स पर डालने की जानकारी जरा भी नहीं थी। उसके जूनियर क्लास की लड़की ने उसे सूचना दी कि उसकी कोई वीडियो सोशल मीडिया पर चल रही है। लड़की ने रोते हुए यह बात माता-पिता को बताई तो ग्रीन फील्ड के पास ग्रीन वैली में रहने वाले उसके माता-पिता ने सीधे अनखीर पुलिस चौकी जाकर बल्लभगढ़ के अर्जुन ठाकुर नामक युवक के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। लेकिन इस गुंडा गिरोह के बाकी लोग अभी तक बेनकाब नहीं हुए थे। एफआईआर दर्ज होते ही पंकज मुजैड़ी नामकर शख्स ने लड़की के पिता पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। पंकज मुजैड़ी और लड़की के पिता एक ही समुदाय से हैं। पंकज कई और लोगों को लेकर लड़की के पिता के पास ग्रीन वैली में पहुंचा और एफआईआर वापस लेने की मांग की।

पुलिस कमिश्नर ढिल्लो के आने के बाद उनकी ईमानदारी और किसी राजनीतिक दबाव में न आने की चर्चा आम है लेकिन पुलिस महकमे के उनके मातहत अफसर अपनी चलाने से मानते नहीं हैं। पुलिस कमिश्नर को लेकर लोगों की यह भी शिकायत होने लगी है कि वह आम जनता से मिलने से बचते हैं, जबकि पुलिस कमिश्नर को ऐसा नहीं होना चाहिए। जनता अगर उन तक नहीं पहुंच पाएगी तो उन्हें शहर की नब्ज कैसे पता चलेगी। किसी अफसर की ऐसी ईमानदारी का कोई फायदा नहीं जब वह जनता से न मिलता हो। पिछले पुलिस कमिश्नर हनीफ कुरैशी तमाम तरह के आरोपों में घिरे थे लेकिन उनके बारे में मशहूर था कि वह आम लोगों से जरूर मिलते थे।

लड़की के माता-पिता ने जब दबाव मानने से इनकार कर दिया तो पंकज ने अर्जुन को फोन लगाया और लड़की के घर के बाहर खड़ी फॉर्च्यूनर, स्कॉर्पियो, ईटीओज गाड़ियों से गुंडे हाथों में लोहे की रॉड, स्टिक, डंडे और पिस्तौल लिए हुए अंदर घुस आए। इन लोगों ने सबसे पहले फायरिंग शुरू कर दी और पूरे घर में तोड़फोड़ मचाई। लड़की के माता-पिता ने किसी तरह से किसी कमरे में छिपकर जान बचाई। ग्रीन वैली में रहने वाले तमाम लोग दहशत में आ गए। लड़की के माता-पिता ने इस जानलेवा हमले की एफआईआर सूरजकुंड पुलिस चौकी में लिखाई। घटना को पांच दिन हो चुके हैं, पुलिस की कई टीमें छापे मार रही हैं लेकिन अपराधी पकड़े नहीं जा सके हैं। इस बीच लड़की के माता-पिता पर समझौते के लिए दबाव बराबर बनाया जा रहा है।

लड़की के माता-पिता के झुकने से इनकार करने के बाद अब यह गुंडा गिरोह खुलेआम धमकियां भी दे रहा है। ग्रीन वैली में ही रहने वाले एक छुटभैया भाजपा नेता का आरोपी पंकज मुजेड़ी रिश्तेदार बताया जाता है। इसके अलावा एक अन्य पहलवान टाइप गुंडा भी इसका रिश्तेदार है। छुटभैया भाजपा नेता भाजपा के मंत्रियों के नाम पर दलाली करता है और पुलिस वालों पर रौब जमाता घूमता है। अर्जुन ठाकुर नामक आरोपी के बारे में पता चला है कि उसके गिरोह में 10-12 युवक हैं जो इसी तरह वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करते हैं। इससे पहले इस तरह की हरकत ये लोग कई लड़कियों के साथ कर चुके हैं। इनके ज्यादातर ठिकाने वो जगहें होती हैं जहां नेहरू कॉलेज, अग्रवाल कॉलेज, मानव रचना यूनिवर्सिटी और डीएवी कॉलेज की लड़कियां रेस्त्रा या मॉल्स में आती-जाती हैं। बताया जाता है कि पुलिस को अर्जुन ठाकुर के बारे में पूरी जानकारी है। उसने उसे तलाशने की कोशिश भी की लेकिन भाजपा नेताओं के संरक्षण के कारण वह बच भी रहा है।

दरअसल, जितने भी गैरकानूनी काम इन दिनों फरीदाबाद में हो रहे हैं, उनसे भाजपा नेताओं का ही नाम बार-बार जुड़ रहा है। नामी स्कूल, कॉलेज-यूनिवर्सिटी के आसपास नशीले पदार्थ बिकने की भी सूचनाएं मिली थीं। जिनमें भाजपा की दलाली करने वालों के नाम सामने आए थे। इसी तरह पिछले दिनों सेक्टर 19 में जिस युवक की हत्या दूसरे गिरोह के लोगों ने की थी, उसमें भी भाजपा नेताओं के नाम आए थे। दरअसल, वह गिरोह भी नशीले पदार्थों और अवैध शराब के धंधे से जुड़ा था। बाद में गिरोह के एक युवक ने गिरोह से अलग होकर मुखबिरी कर दी। इस वजह से उसकी हत्या कर दी गई।

खास बात यह है कि पुलिस कमिश्नर ढिल्लो के आने के बाद उनकी ईमानदारी और किसी राजनीतिक दबाव में न आने की चर्चा आम है लेकिन पुलिस महकमे के उनके मातहत अफसर अपनी चलाने से मानते नहीं हैं। पुलिस कमिश्नर को लेकर लोगों की यह भी शिकायत होने लगी है कि वह आम जनता से मिलने से बचते हैं, जबकि पुलिस कमिश्नर को ऐसा नहीं होना चाहिए। जनता अगर उन तक नहीं पहुंच पाएगी तो उन्हें शहर की नब्ज कैसे पता चलेगी। किसी अफसर की ऐसी ईमानदारी का कोई फायदा नहीं जब वह जनता से न मिलता हो। पिछले पुलिस कमिश्नर हनीफ कुरैशी तमाम तरह के आरोपों में घिरे थे लेकिन उनके बारे में मशहूर था कि वह आम लोगों से जरूर मिलते थे।

बहरहाल, शहर में सक्रिय लड़कियों के विडियो बनाने वाले अर्जुन ठाकुर और पंकज मुजैड़ी के गिरोह को पुलिस कब तक काबू करती है, उसी से अंदाजा लग जाएगा कि मातहत अफसर पुलिस कमिश्नर के निर्देश पर कितना अमल कर पाते हैं। इस गिरोह ने और भाजपा नेताओं के संरक्षण ने फरीदाबाद पुलिस की विश्वसनीयता को दांव पर लगा दिया है।

चुनाव सिर पर आये तो दिखी टोल की लम्बी लाइन धरती लगी फटने तो खैरात लगी बंटने

फ़रीदाबाद (म.मो.) 4 जून को स्थानीय विधायक एवं हरियाणा के उद्योग मंत्री विपुल गोयल प्रात: 9 बजे जब दिल्ली जा रहे थे तो बदरपुर टोल पर वाहनों की लम्बी-लम्बी कतारें देख कर लगे ड्रामा करने। कभी टोल कर्मचारियों को डांटते तो कभी एनएचएआई (राजमार्ग प्राधिकरण) के अधिकारियों को। उस वक्त उनको बड़े-बड़े सूचना बोर्ड भी याद आ गये जो टोल उगाहने वाली कम्पनी को लगाने चाहिये थे जो उन्होंने नहीं लगाये। इस ड्रामे के दौरान टोल के तमाम गेट खोल दिये गये और सैंकड़ों वाहन फ्री में निकल गये। मंत्री भी गद-गद हो गये, जैसे उन्होंने कोई बहुत बड़ा काम जनता के लिये इस चुनावी वर्ष में कर दिया हो।

शायद ही कोई सप्ताह जाता होगा जब मंत्री जी इस टोल से 2-4 बार न गुजरते हों। यह संभव नहीं कि उन्होंने बीते साढे तीन साल में पहले कभी यहां लम्बी कतारें न देखी हों। हालांकि देखकर भी देखने की जरूरत भी नहीं पड़ती थी क्योंकि वे अपने जैसों के लिये बने स्पेशल वीआईपी गेट से सट से गुजर जाते थे। परन्तु अब तो लोकसभा चुनाव में मात्र 10 माह रह गये हैं, इस लिये कुछ तो ड्रामा करना ही था।

वैसे 2014 के चुनाव से पूर्व स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर ने भी इसी टोल पर अच्छा खासा ड्रामा किया था। उस वक्त गूजर ने इसे जजिया टैक्स बताते हुए वायदा किया था कि उनकी सरकार बनी तो इसे तुरंत हटा दिया जायेगा। परंतु सरकार में मंत्री बनते ही, वह भी अपने वायदे को ऐसे भूल गये जैसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हर भारतीय के खाते में 15-15 लाख रुपये डालना भूल गये।

मंत्री गोयल खुद ही समस्या है!

संदर्भवश पाठक यह भी जान लें कि देश के कानून के अनुसार यदि इस पुल को हरियाणा की सीमा में न उतारा जाता, यानी दिल्ली की सीमा में ही उतार दिया जाता तो टोल टैक्स लग ही नहीं सकता था। इसकी लम्बाई को जान-बूझ कर हरियाणा सीमा में उतारने के लिये खींचा गया था ताकि टोल टैक्स का धंधा चलता रहे और वाहनों की लम्बी कतारों में नागरिक फ़ंसे रह कर परेशान होते रहें।

इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह जानना है कि इस पुल की वास्तव में जरूरत ही नहीं थी। पुल बनने से पूर्व इस राजमार्ग पर ढाबों, रेहड़ियों, गंदगी के ढेरों आदि का कब्जा था। पुल बनाने के नाम पर न केवल उन सब अवैध कब्जों को हटा दिया गया बल्कि दिल्ली पुलिस के थाने की इमारत को भी साफ़ कर दिया गया। यदि इतना सफ़ाया ही करना था तो ट्रैफ़िक स्वत: ही जाम-मुक्त हो जाता, पुल की तो कोई जरूरत ही नहीं थी। हां, अधिक से अधिक सौ मीटर का एक अंडर पास महरोली व मीठापुर रोड के लिये बना सकते थे बजाये इस ढाई किलो मीटर लम्बे पुल के। लेकिन शासक वर्ग ऐसा कर देता तो टोल से होने वाली लूट कमाई व जनता की ऐसी-तैसी कैसे होती?

अब भी टोल से बचने के लिये बहुत से वाहन पुल के ऊपर से न जाकर नीचे से ही जाते हैं। जाहिर है इससे टोल टैक्स लूटने वाली कम्पनी को नुक्सान तो होता ही है। शायद इसी लिये कम्पनी के इशारे पर दिल्ली ट्रैफ़िक पुलिस पुल के नीचे बिना मतलब के जाम को हटाने का कभी कोई प्रयास करती नहीं देखी गयी।

मंत्री गोयल जनता से समस्यायें पूछ रहे हैं

बीते सप्ताह मंत्री जी सेक्टर 14 के एक पार्क में प्रात: सैर करते हुये जा पहुंचे। वहां वे लोगों से समस्याए पूछने लगे। अपने बीच मंत्री को पाकर मोदी भगत व चापलूस तो गदगद हो गये। समस्याएं तो क्या बतानी थी, मंत्री के साथ फ़ोटो खिचवाने की होड़ में लग गये। मंत्री जी को शहर में रहते उम्र बीत गयी यदि अब भी उन्हें समस्याओं का ज्ञान नहीं तो अब चुनावी वर्ष में पूछ कर भी वे क्या कर लेंगे? फ़िर भी उन्होंने श्रेय लेने के चक्कर में ढाई करोड़ की टाइलें सेक्टर की सड़कों के किनारे लगाने की बात कह दी।

लेकिन यह नहीं बताया कि शहर की जनता को सीवर जाम व आवारा पशुओं खासकर कुत्तों से कब निजात मिलेगी? अस्पतालों में रैबीज़ के टीके व अन्य दवाओं की आपूर्ति तथा डॉक्टरों व स्टाफ़ की कमी कब पूरी होगी? सरकारी स्कूलों की दशा कब सुधरेगी? हवा की झोंको से बिजली गुम हो कर घंटों तक नहीं आती, चार बूंद पानी बरसता है तो सड़कों पर जलभराव के चलते चलना दूभर हो जाता है। मोदी के चार साल पूरे होने के बावजूद रेलवे की शटल सेवा में सुधार तो क्या होना था, स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। कोई ऐसा सरकारी दफ़्तर नहीं बचा जहां बिना रिश्वत दिये किसी का कोई काम हो जाये। क्या मंत्री महोदय इन सब कड़वे तथ्यों से अभी तक अनभिज्ञ हैं? कोई जान-बूझ कर धृतराष्ट्र बना रहे तो बना रहे परन्तु जनता अंधी नहीं है मंत्री जी।